अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

निज पर शासन, फिर अनुशासन: अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण

-राष्ट्रीय राजमार्ग 47 पर लगभग चैदह किलोमीटर का हुआ विहार

-कंजीकुझी गांव स्थित गांधी स्मारक ग्राम सेवा केन्द्र में पहुंचे महातपस्वी महाश्रमण

-आचार्यश्री ने लोगों को आत्मानुशासन की दिशा में आगे बढ़ने की दी पावन प्रेरणा

06.03.2019 कंजीकुझी, अलप्पुझा (केरल): जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने बुधवार को चेरथला स्थित सेंट जोसेफ पब्लिक स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। केरल की धरती पर गतिमान आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के साथ निरंतर गतिमान हैं। फरवरी महीने में ही केरल का मौसम गर्म बना हुआ है। हालांकि आज आसमान में कुछ बादल छाए हुए थे, इस कारण सूर्य की तीव्रता कुछ कम महसूस हो रही थी। विहार के दौरान रास्ते में अनेकानेक लोगों को आचार्यश्री के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। कहीं स्कूल जाते बच्चों को आशीष प्राप्त हुआ तो कहीं अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी के लिए काम पर निकल रहे लोगों पर भी आचार्यश्री की आशीषवृष्टि हुई। राष्ट्रीय राजमार्ग 47 पर लगभग चैदह किलोमीटर का प्रलम्ब विहार कर आचार्यश्री कन्जीकुझी गांव स्थित गांधी स्मारक ग्राम सेवाकेन्द्र में पधारे।

प्रातः के मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने अपनी अमृतवाणी का रसपान कराते हुए कहा कि आदमी के जीवन में अनुशासन का बहुत महत्त्व है। वह दो प्रकार का होता है-पहला श्वानुशासन, दूसरा परानुशासन। दूसरों पर भी अनुशासन रखना आवश्यक हो जाता है और स्वयं पर अनुशासन रखना भी आवश्यक होता है। दूसरों पर अनुशासन करने वाले व्यक्ति में खुद पर भी अनुशासन होना चाहिए। कोरा दूसरों पर अनुशासन करना चाहे और स्वयं पर अनुशासन न हो तो दूसरों पर अनुशासन करना भी कठिन हो सकता है। इसलिए आदमी को पहले स्वयं पर अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिए। अपने मन, वाणी और काया पर अनुशासन करने का प्रयास करना चाहिए।

स्वयं पर अनुशासन करने के लिए आदमी को तप, साधना और संयम का अभ्यास करना होगा। आदमी को सबसे पहले अपने मन को वश में करने का प्रयास करना चाहिए। मन को साधने के लिए अपनी इन्द्रियों का संयम करने का प्रयास करना चाहिए। 'निज पर शासन, फिर अनुशासन' की बात होनी चाहिए। अनुशासन होता है तो एकता भी बात भी हो सकती है। कलियुग में तो एकता ही सर्वश्रेष्ठ शक्ति होती है, इसलिए कहा भी गया है-संघे शक्ति कलियुगे'। जहां अनुशासन होता है, वहां एकता भी हो सकती है। आचार्यश्री ने कुछ प्रेरणादायी कथानकों के माध्यम से श्रद्धालुओं को एकता के संदर्भ में प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को आत्मानुशासन की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।